"अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी"

देखो :– हम कैसे श्री प्राणनाथ जी के अंग हैं।
जो झूठी मान और प्रशंसा के लिए दुनियां की उपाधियाँ देते हैं।

–श्री शामसुन्दर, अमृतसर.

यह ब्रह्माण्ड सदियों से चला आ रहा है। यहाँ पर समय–समय के मुताबिक ऋषि मुनी, देवी–देवता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश के अवतार इस पृथ्वी पर हुए, उन्होंने मौके के मुताबिक अपने वचन कहे। जब भी पारब्रह्म परमात्मा के विषय में किसी ने पूछा तो यही कहा कि वह है तो जरूर, पर हमारी पहुंच से बाहर हैं। हर ग्रन्थ वेद शास्त्र पुराण, गीता भागवत रामायण मुसलमानों के कुरान आदि इसाइयों के बाईबिल, सिखों के गुरु ग्रन्थ साहिब (जो भगतों की वाणी है) हर एक में यही लिखा है कि वह पारब्रह्म हमारी पहुंच से बाहर है।

कारज कारण कि उसी पारब्रह्म की आनन्द अंगनाओं की इस ब्रह्माण्ड को देखने की इच्छा हुई तथा उनके सत अंग अक्षरब्रह्म की उन आनन्द अंगनायें को लीला दिखाने की इच्छा हुई। उस अक्षरातीत ने सत अंग को हुकम दिया (क्योंकि सत अंग अक्षरब्रह्म को इस दुनियाँ को बनाने व मिटाने की सत्ता (शक्ति) दे रखी है) हुकम मिलते ही इस ब्रह्माण्ड के चलाने वाले ब्रह्मा, विष्णु, महेश को हुकम दिया कि पारब्रह्म अपनी अंगनाओं को लेकर इस ब्रह्माण्ड को देखने आ रहे हैं इसे खुब अच्छी तरह सजा दो। इस ब्रह्माण्ड के प्रबन्धक ब्रह्मा, विष्णु, महेश ने दुनियाँ में अवतार धारण करके सभी ग्रन्थों में उनके आने की बात कही, यहाँ तक कि आने का समय भी लिखा।

सब से पहले वह भारत की पवित्र धरती ब्रज में अपनी अंगनाओं के साथ प्रकट हुए, इस दुनियाँ में ११ साल ५२ दिन रहे और फिर अक्षरब्रह्म के ब्रह्माण्ड योगमाया में चले गये। वहाँ रास खेल के अक्षरब्रह्म की इच्छा को पूरा करके वापिस अपने परमधाम चले गये। सभी अंगनाओं की इच्छा पूरी न होने के कारण इस ब्रह्माण्ड में जो कि अब चल रहा है सम्मत १६३८ को भेजा। आने से पहले देखा कि इस

Nijanand App

दुनियाँ के सभी ग्रन्थों में मेरे आने के बारे व मेरी पहचान दी है पर मुसलमानों के ग्रन्थों में कुछ भी नहीं लिखा है। सो महमद साहिब के तन में बैठ कर सारी हकीकत कही, सारा आने से जाने तक का प्रोग्राम दिया। माया की इच्छा पूरी न होने के कारण जुदे–जुदे घर, जुदे-जुदे नगर, जुदी–जुदी जाति, जुदे–जुदे रस्मों रिवाजों में डाल दिया। महलों में रहने वाली, जिन्होंने कभी दुख नाम सुना भी नहीं था इस माया की प्रबलता के सामने अपने घुटने ही नहीं टेके बल्कि अपने घर बार, रस्मों रिवाज, यहाँ तक कि अपने खाविद को भी भूल गई। ऐसा भूली कि कभी कुछ याद ही न आये।

वह मेहरबां धाम के दुलहा श्री पारब्रह्म अक्षरातीत जो कि एक पल भी अपनी रूहों के बिना नहीं रह सकते इस योग माया में सबसे पहले श्याम जी के मन्दिर में प्रकट हुए अपनी सारी पहचान करवाई और वचन दिया कि जब तक सब रूहें जाग नहीं जायेंगी मैं वापिस नहीं जाऊँगा और इस दुनियाँ को अखण्ड करूँगा। अपनी रूहों को अपने सरूप की, अपने घर की, अपनी रस्मों रिवाज की पहचान इस दुनियाँ के ग्रन्थों से करवा रहे हैं अपने आपको इस दुनियां के सभी ग्रन्थों के प्रमाण देकर बुद्ध निष्कलंक अवतार, आखरूल जमां इमाम मेंहदी, पारपुरख, Supreme Truth God पारब्रह्म अक्षरातीत साबित किया पर अपनी रूहों के जिन के वह खाविद है श्री प्राणनाथ जी बने। श्री मुख वाणी में श्री इन्द्रावती कहती है–

सुनों रे सतवादियों कहूं सो, सतगुरू मुख बान
धनी मेरा प्रभु विश्व का, प्रगट्या प्रमान॥

आज जो भी दो शब्द श्री प्राणनाथ जी के बारे में कहे जा रहे हैं वह अक्षरातीत श्री प्राणनाथ जी की अपार कृपा दृष्टि है, आप धाम के धनी श्री राज जी महाराज ने अपने चरणों में लिया, अपने घर की पहचान कराई, अपने घर की रस्मों रिवाजे बताई, हम उनके अंग बने और सभी सुन्दरसाथ कहलाये।

बड़े अफसोस व शर्मिन्दगी की बात है जिसे यह सुन कर मन इतना दुःखी हो जाता है जिसका वर्णन भी नहीं कर सकते। कुछ स्वार्थी लोग जो श्री प्राणनाथ जी के अंग कहलाते हैं श्री प्राणनाथ जी की वाणी का प्रचार कर रहे हैं, दुनियां में अपनी मान प्रशंसा करवाने के लिये अपने ज्यादा चेले बनाने के लिये श्री प्राणनाथ को दुनियां की उपाधि देकर हम अन्जान सुन्दर साथ को गुमराह कर रहे हैं। पूर्ण ब्रह्म परमात्मा के विषय ही में रामचन्द्र भगवान ने रामायण में कहा है—

नेति–नेति कहि वेद निरूपा.
निजानन्द निपाधि अनूपा।

Nijanand App

शिव विरंचि विष्णु भगवाना,
उपजहिं जासो अंशते नाना।

सुन्दरसाथ जी यह दुनियां ज्ञान का भण्डार है यहां पर हर समय नये–नये ज्ञान नई–नई कहानियां पैदा होती हैं पर हम अन्जान लोग इन उच्च कोटि के महात्मा विद्वानों के पास, उनके वेश भूषा, उनकी पदवी देखकर फँस जाते हैं। हम तो एक अन्धे के समान हैं जैसे अन्धे को जिस तरफ भी ले जाये वह चला जायेगा। उसी प्रकार यह विद्वान लोग हम अन्धों को अपने पीछे लगा कर कुएँ में गिरा देते हैं यानि कि हमारी उमर बीत जाती है। वह मेहरबां श्री प्राणनाथ अक्षरातीत ने श्री तारतम की ज्योति हमारी आंखों में जगा दी जिससे हम हर ज्ञान को परख सकें। अपने श्री राज जी धाम के दूल्हा को पहचान सके। पर दुख उन लोगों पर है जिन्होंने गिराने का ठेका ले रखा है। जिस श्री प्राणनाथ जी को वाणी का प्रचार कर रहे हैं अभी तक उसके सरूप की ही पहचान नहीं जैसे चिन्तामन महा कबीर पंथ का आचार्य था कबीर जी की गद्दी पर बैठा था और कबीर जी को आधा भगत व माया से लिप्त कमाल (जो उनका लड़का था) को पूरा भगत कहता था ठीक उसी प्रकार हमारे निजानन्द सम्प्रदाय के वह महान पुरुष, जिनकी चरणरज के लिए दुनियाँ के बनाने वाले तरस रहे हैं, जिनका गुरुनानक देव जी ने सुखमणी साहिब विशेषताओं से भर दी है। श्री राज जी ने वाणी में उन्हीं का गुण गान किया है पर वह धर्म के सरवाह अपनी मान प्रशंसा के लिए, धर्म में पूज्य बनने के लिए, धनवान लोगों की खुशामतें करने के लिए जगह–जगह जाकर श्री प्राणनाथ जी को दुनियां की उपाधियां जैसे उच्चकोटि के महातमा, विद्वान, सन्त तपस्वी आदि देते हैं। अगर उनसे पूछा जाए तुम बड़े हो या जिसकी सम्प्रदाय का अंग बने हो, जिसकी वाणी का प्रचार करते हो उसे आप ही उपाधियां देते हो। यह तो वही कालीदास जैसा हाल है जिस डाली में बैठना उसे ही काटना। पर यह डाली कटने वाली नहीं है।

मेरे सर के ताज, मेरे जीव के जीवन श्री प्राणनाथ जी के पूज्य साथियों अपने खाविद को अपनी मान मर्यादा के लिए दाव पर मत लगा दो। आपको इस क्षण भर इज्जत से क्या मिलेगा। यह मनुष्य तन रहने वाला नहीं है, आज है कल नहीं रहेगा। अपनी आत्म की आवाज से चलो। अपने आपको धनवानों के तराजू में मत डाल दो। अगर इज्जत ही करवानी है तो श्री प्राणनाथ जी की वाणी का सही प्रचार करो ताकि आपकी इज्जत सारे ब्रह्माण्ड में हो। सादर प्रणाम !

Nijanand App